राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

पाथेय कण

www.patheykan.com

फाल्गुन कृष्ण 6, वि.2080,युगाब्द 5125, 1 मार्च, 2024

समान नागरिक संहिता

patheykan@gmail.com

विधान सभा भवन, उत्तराखंड

पाथेय कण के श्रीराम जन्मभूमि विशेषांक व कलैंडर का विमोचन

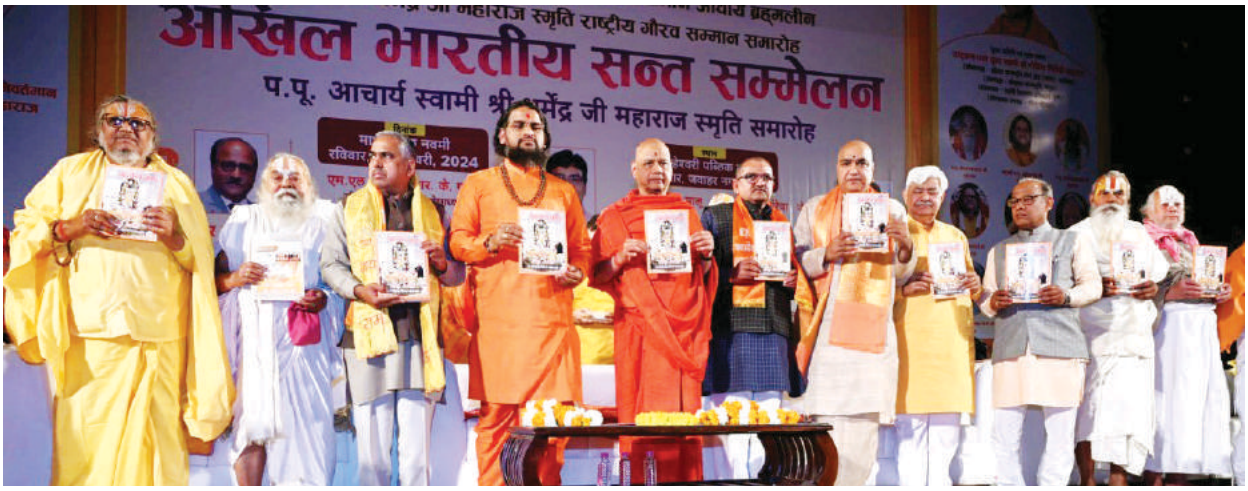

पाथेय कण के विशेषांक 'श्रीराम जन्मभूमि: संघर्ष से सिद्धि और 'स्व' का जागरण' तथा कलैंडर का विमोचन करते श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष श्री गोविन्द देव गिरि जी महाराज। साथ में मंच पर हैं- रेवासा पीठाधीश्वर श्री राघवाचार्य, श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्यगोपाल दास के उत्तराधिकारी महंत कमलनयन दास,विहिप,राजस्थान के क्षेत्र संगठन मंत्री श्री राजाराम, गोआ के पद्मश्री ब्रहमेशानंद जी, संघ के क्षेत्रीय प्रचारक निम्बाराम जी, पंचखंड पीठाधीश्वर आचार्य सोमेंद्र जी, विहिप के अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आलोक कुमार जी तथा पाथेय कण संस्थान सचिव महेंद्र सिंघल जी।

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष श्री गोविन्द देव गिरि जी महाराज ने जयपुर में गत 8 फरवरी को आयोजित अखिल भारतीय संत सम्मेलन के कार्यक्रम में पाथेय कण पत्रिका के 'श्रीराम जन्मभूमि विशेषांक' एवं श्री रामलला विग्रह कलैंडर का विमोचन किया। इस अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विश्व हिंदू परिषद् के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आलोक कुमार ने कहा कि यह विशेषांक संग्रहणीय एवं पठनीय है। इसे अवश्य पढ़ें। विशेषांक में श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति के लिए किए गए संघर्ष, न्यायालयी कार्यवाही, मंदिर निर्माण तथा इसमें संपूर्ण देश के योगदान की झलक के साथ ही अयोध्या के विकास को रेखांकित किया गया है। इसमें कारसेवा से संबंधित 11 विशेष संस्मरणों को पाठकों के समक्ष विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। पाथेय कण संस्थान करीब डेढ़ लाख परिवारों को श्री रामलला विग्रह कलैंडर वितरित करेगा। सभी पाथेय कण सदस्यों को यह कलैंडर भेंट स्वरूप उपलब्ध करवाया जाएगा। यह कलैंडर बिकाजी कंपनी और पाथेय कण के संयुक्त तत्वावधान में प्रकाशित करवाया गया है। इस अवसर पर प्रबंध संपादक ओमप्रकाश जी, सह प्रबंध संपादक श्याम सिंह जी तथा संरक्षक माणकचन्द जी उपस्थित थे।

पाक्षिक
पाथेय कण
फाल्गुन कृष्ण 6 से
फाल्गुन शुक्ल 6 तक
वि.सं.2080, यु.5125
1 - 15 मार्च, 2024
वर्ष : 39 अंक : 19

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

सम्पादन सहयोगी
हेमलता चतुर्वेदी

प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

सह प्रबंध सम्पादक
श्याम सिंह

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

पाथेय कण संस्थान के लिए
प्रकाशक एवं मुद्रक:
माणकचन्द

सहयोग राशि
एक वर्ष 150/-
पन्द्रह वर्ष 1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-17 (राजस्थान)

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर संपर्क करें-
WhatsApp 79765 82011
Mobile No. 94136 45211
99297 22111

पाथेय कण प्राप्त करने के लिए सहयोग राशि Paytm से Mob.No. 7976582011 पर भेजें

E-mail
patheykan@gmail.com
Website
www.patheykan.in

समान नागरिक संहिता और नेहरू जी

'**दिप्रिंट**' पत्रिका में 30 जुलाई, 2023 को 'हिंदू कोड बिल बनाम समान नागरिक संहिता' पर छपे एक लेख की आरंभिक पंक्तियां थीं-'' नेहरू एक महान राष्ट्र बनाने की कोशिश कर रहे थे, जिसमें सभी नागरिकों को समान अधिकार हों, लेकिन संसद उन्हें रोक रही थी।'' लेखक द्वारा यह कथन हिंदू विधि में बदलाव करने के लिए संसद में प्रस्तुत हिंदू कोड बिल के संदर्भ में किया गया है। काश! इस कथन में सत्यता होती। काश, नेहरू जी सभी नागरिकों के लिए समान अधिकारों की बात करते, परंतु नेहरू जी केवल हिंदुओं की शास्त्रीय विधि में बदलाव की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने मुसलमान, ईसाई आदि अन्य मजहबों के लोगों को उस बिल से अलग रखा।

समान नागरिक संहिता' या यूसीसी(कॉमन सिविल कोड) से तात्पर्य 'सब नागरिकों के लिए समान कानून होना तो है ही, परंतु इसका एक प्रमुख उद्देश्य परम्परागत-मजहबी-शास्त्रीय विधियों में समयानुकूल तथा लैंगिक समानता (स्त्री-पुरुष समानता) के आधुनिक विचारों के अनुकूल बदलाव करना भी है। वर्तमान हिंदू विधि वेद, स्मृतियों, भाष्यों में वर्णित शास्त्रीय हिंदू विधि नहीं है। यह तथाकथित आधुनिक विचारों के आधार पर निर्मित हिंदू विधि है जिसे सन 1955-56 में संसद द्वारा चार अधिनियम पारित करके पुनर्निर्धारित किया गया था। यह पुनर्निर्धारित हिंदू विधि इस देश की तत्कालीन 85 प्रतिशत जनसंख्या जिसमें सनातनी, आर्यसमाजी, जैन, सिक्ख, बौद्ध आदि शामिल हैं, पर लागू की गई। कह सकते हैं कि यह एक प्रकार से 'समान नागरिक संहिता' ही थी। तब प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि भारत की शेष 15 प्रतिशत जनसंख्या (जिसमें मुस्लिम, ईसाई, पारसी आदि हैं)को शामिल करते हुए एक समग्र समान नागरिक संहिता क्यों नहीं बनायी गई?

हिंदू समाज में रामानन्दाचार्य, दयानन्द सरस्वती, राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद विद्यासागर, हरबिलास शारदा, विवेकानन्द, ज्योतिबा फूले, आम्बेडकर, महात्मा गांधी, डॉ. हेडगेवार जैसे अनेक महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने बाल विवाह, सती प्रथा, छुआछूत आदि पर रोक लगाने, विधवा विवाह की अनुमति देने, स्त्री शिक्षा का प्रसार करने आदि सुधारों के लिए जन जागरण किया और कानून भी बनवाए। परंतु मुस्लिम समाज में सुधारों का ऐसा कोई प्रयास दिखाई नहीं दिया। समाज में तीन तलाक, तलाकशुदा स्त्रियों को भरण पोषण से वंचित रखना, हलाला, बाल विवाह, एक से अधिक बीवियाँ रखने जैसे अनेक नियम हैं, जो आधुनिक समाज से मेल नहीं खाते। इसलिए मुसलमानों सहित देश के सभी नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता स्वाधीनता प्राप्ति के बाद ही बना ली जानी थी।

आश्चर्य है कि कांग्रेस द्वारा 1941 में बीएन राव के नेतृत्व में 'हिंदू लॉ कमीशन' और फिर 1944 में 'हिंदू कोड बिल समिति' का गठन किया गया। तब क्यों नहीं 'भारतीय कोड बिल समिति' बनाई गई? भारत का संविधान बनाने के लिए बनी संविधान सभा के सामने देश को स्वाधीनता मिलने से पूर्व ही उक्त बीएन राव समिति द्वारा तैयार 'हिंदू कोड बिल' 11 अप्रैल, 1947 को प्रस्तुत कर दिया गया। यह 'हिंदू कोड बिल' विवाह, उत्तराधिकार, दत्तक आदि के संबंध में परंपरागत-शास्त्रीय हिंदू विधि में संशोधन करने के लिए था, जिसे नेहरू जी अपनी पूरी कोशिश के बाद भी संविधान सभा से पारित नहीं करा सके थे। बाद में सन 1955-56 में इसे चार टुकड़ों में बांटकर चार अधिनियमों के माध्यम से पारित कराया गया।

नेहरू जी द्वारा हिंदू कोड बिल लाने पर उस समय डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, सरदार पटेल व अन्य कई नेता चाहते थे कि हिंदू विधि में सरकारी स्तर पर बदलाव किए जाने से पहले पूरे देश में जनमत तैयार किया जाना चाहिए। 4 सितम्बर, 1951 को तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद ने प्रधानमंत्री नेहरू को पत्र लिखकर सिर्फ हिंदुओं के लिए हिंदू कोड बिल लाने का विरोध करते हुए कहा था कि यदि जो प्रावधान किए जा रहे हैं, वे ज्यादातर लोगों के लिए लाभकारी हैं तो केवल एक समुदाय के लिए ही क्यों लाए जा रहे हैं? बाकी समुदाय इसके लाभ से क्यों वंचित रहे। सभी नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता क्यों नहीं लागू की जाती? एक समुदाय को कानूनी

शेष पृष्ठ 5 पर ...

देश में समान नागरिक संहिता लागू होने की शुरुआत

उत्तराखंड बना पहला राज्य

उत्तराखंड स्वाधीन भारत का पहला राज्य बन गया है जहां अनुसूचित जनजाति को छोड़कर सभी समुदायों के लिए विवाह, तलाक, उत्तराधिकार, लिव-इन-रिलेशन आदि के संबंध में समान नियम लागू होंगे। 7 फरवरी को उत्तराखंड की विधानसभा ने समान नागरिक संहिता विधेयक को पारित कर दिया। मुख्यमंत्री ने इसे 'ऐतिहासिक क्षण' बताया है। यह कानून महिलाओं के प्रति सदियों से हो रहे अन्याय को समाप्त करेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि असामाजिक तत्व समुदायों को बांटकर रखना चाहते हैं।

जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाना, राम मंदिर का निर्माण और समान नागरिक संहिता लागू करना- ये तीन ऐसे मुद्दे थे जो लगभग असंभव माने जाते थे। पहले दो मुद्दे धरातल पर उतरने के बाद अब तीसरे मुद्दे की ओर भी देश आगे बढ़ता दिखाई दे रहा है।

यद्यपि गोआ राज्य में समान नागरिक संहिता लागू है, परंतु यह स्वाधीनता के पहले से ही है।

संविधान के अनुच्छेद 44 द्वारा राज्य

को समान नागरिक संहिता बनाने का निर्देश स्पष्ट रूप से दिया गया है। कई उच्च न्यायालय तथा सर्वोच्च न्यायालय इस संबंध में सरकार को बार-बार निर्देशित करते रहे हैं।

देश में राष्ट्रीय चेतना का प्रखरता से प्रकटीकरण होने का ही प्रभाव माना जाना चाहिए कि उत्तराखंड का प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस भी समान नागरिक संहिता विधेयक का स्पष्ट विरोध नहीं कर पाया, परंतु विधेयक को पारित करने में रोड़े अवश्य अटकाए। कांग्रेस की ओर से कहा गया कि वे विधेयक का विरोध नहीं कर रहे हैं परंतु इसे पारित करने से पहले एक चयन समिति को भेजा जाना चाहिए।

ढोल-नगाड़ों से स्वागत

जहां एक ओर उत्तराखंड विधानसभा में समान कानून वाला विधेयक पारित हो रहा था वहीं विधानसभा के बाहर सैकड़ों लोग ढोल-नगाड़े बजाकर अपनी खुशी प्रकट कर रहे थे। मोदी-मोदी की तर्ज पर 'धामी-धामी' के नारे लगाए जा रहे थे।

असम ने भी बढ़ाए कदम

समान नागरिक संहिता की ओर असम राज्य ने भी कदम बढ़ा दिए है। गत 24 फरवरी को असम केबिनेट ने 'असम मुस्लिम विवाह और तलाक पंजीकरण अधिनियम, 1935' को रद्द करने का निर्णय लिया है। इस निर्णय को राज्य सरकार की बाल विवाह के विरूद्ध की जा रही कार्रवाई से जोड़कर देखा जा रहा है। इस अभियान के अन्तर्गत वहां अब तक चार हजार से ज्यादा लोग गिरफ्तार किए जा चुके हैं।

गत 26 फरवरी को असम विधानसभा

दुनिया के कई देशों में यूनिफॉर्म सिविल कोड लागू है। इनमें अमेरिका, आयरलैंड, पाकिस्तान, बांग्लादेश, मलेशिया, तुर्किये, इंडोनेशिया, सूडान, मिस्र , इजरायल, जापान, फ्रांस, सऊदी अरब, नाइजीरिया और रूस जैसे देश शामिल हैं। इन देशों में सभी धर्म के लोगों के लिए एक समान कानून होता है।

में मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा ने कहा कि उनकी सरकार 'सामने के दरवाजे' से समान नागरिक संहिता लाएगी।

भाजपा शासित गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश व महाराष्ट्र ने भी समान नागरिक संहिता लागू करने के संकेत दिए हैं। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने पिछले महिने एक टीवी साक्षात्कार में कहा था कि उनकी सरकार यूसीसी लागू करेगी।

यूसीसी से बदलाव

बहु-विवाह यानी एक से ज्यादा शादी पर रोक लगेगी। लड़कियों की शादी की आयु बढ़ाई जाएगी ताकि वे शादी से पहले ग्रेजुएट हो सकें। लिव इन रिलेशनशिप का डिक्लेरेशन जरूरी होगा। माता-पिता को सूचना जाएगी। उत्तराधिकार में लड़कियों को लड़कों के बराबर का हिस्सा मिलेगा, चाहे वो किसी भी जाति या धर्म के हों। मुस्लिम महिलाओं को भी बच्चा गोद लेने का अधिकार मिलेगा। गोद लेने की प्रक्रिया आसान की जाएगी। हलाला और इद्दत (भरण-पोषण) पर रोक लगेगी। शादी का रजिस्ट्रेशन अनिवार्य होगा। बगैर रजिस्ट्रेशन किसी भी सरकारी सुविधा का लाभ नहीं मिलेगा। पति-पत्नी दोनों को तलाक के समान अधिकार होंगे। तलाक का जो ग्राउंड पति के लिए लागू होगा, वही पत्नी के लिए भी लागू होगा। नौकरीशुदा बेटे की मौत पर पत्नी को मिलने वाले मुआवजे में वृद्ध माता-पिता के भरण पोषण की भी जिम्मेदारी होगी। पत्नी पुनर्विवाह करती है तो पति की मौत पर मिलने वाले कंपनसेशन (वित्तीय मुआवजा)में माता-पिता का भी हिस्सा होगा।

कट्टरपंथियों द्वारा विरोध

समान नागरिक संहिता लागू करने का मुस्लिम संगठन व कट्टरपंथी नेतृत्व विरोध कर रहा है। एआईएमआईएम के नेता असदुद्दीन ओवैसी ने सरकार पर यूसीसी के बहाने मुसलमानों को भड़काने का आरोप लगाया है। ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने यूसीसी का विरोध करने का निर्णय लिया है। देहरादून के शहर काजी ने इसे मुस्लिमों के खिलाफ बताया है।

वे इसे संविधान के

संपादकीय शेष...

दखलंदाजी के लिए क्यों चुना गया? 1947 में स्वाधीनता के बाद यूसीसी के लिए जोरदार माहौल बन गया था। यह लागू भी हो जाता, लेकिन तब नेहरू जी इसके लिए तैयार नहीं हुए। कांग्रेस के बड़े नेता आचार्य जेबी कृपलानी ने इस मामले में नेहरू जी को आड़े हाथों लिया था। नेहरू जी को लगता था कि यूसीसी लागू करने पर भारत में रुक गए मुसलमानों में असुरक्षा की भावना पैदा होगी। उस समय डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कहा था कि वह जानते हैं कि कोड को 'भारतीय' क्यों नहीं बनाया गया। नेहरू सरकार की मुस्लिम समुदाय को छूने की हिम्मत नहीं है। हिंदू महासभा के प्रमुख एनसी चटर्जी ने प्रश्न किया था कि अगर बहु विवाह खराब है तो मुस्लिम बहनों को इससे आजादी दिलाने की कोशिश क्यों नहीं की गई?

23 नवम्बर, 1948 को पहली बार संविधान सभा में यूसीसी के मुद्दे पर बहस हुई। कांग्रेस के मीनू मसानी जो मजहब से पारसी थे, ने यूसीसी का प्रस्ताव रखा। हंसा मेहता, राजकुमारी अमृता कौर, आंबेडकर, केएम मुंशी, अल्लादी कृष्णास्वामी अय्यर जैसे कई सदस्यों ने यूसीसी के पक्ष में जोरदार तर्क दिए। संविधान सभा में हुई बहस के दौरान पं. लक्ष्मीकांत मैत्रा ने कहा था ''हिंदुओं, ईसाइयों, पारसियों, सिखों, जैनियों, बौद्धों, मुसलमानों पर लागू एक सार्वभौमिक नागरिक संहिता लाओ। आप मुसलमानों को छूने की हिम्मत नहीं करते।''

यूसीसी के मुद्दे पर डॉ.भीमराव आंबेडकर ने मुस्लिम सदस्यों को, जो यूसीसी का विरोध कर रहे थे, संबोधित करते हुए कहा ''मैं नहीं समझ पा रहा हूँ कि धर्म कैसे इतनी जगह घेर सकता है कि सारा जीवन ही ढक ले और विधायी नियमों को जमीन पर उतरने से रोके। आखिर हमें ये आजादी किसलिए मिली है? हमें ये आजादी हमारी सामाजिक व्यवस्था को सुधारने के लिए मिली है।''

यूसीसी पर हुई बहस का समापन करते हुए आंबेडकर जी ने कहा,''यूसीसी नीति निदेशक तत्व में रहेगी। ... राज्य को जब सही लगे तब इसे लागू कर सकेगा।'' इसलिए आंबेडकर जी के कथनानुसार यदि उत्तराखंड की सरकार को वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उचित लगा कि यूसीसी लागू की जाए, तो वहां समान नागरिक संहिता का कानून बनाने का स्वागत किया जाना चाहिए।

-रामस्वरूप अग्रवाल

अनुच्छेद 25 के विरूद्ध बता रहे हैं। अनुच्छेद 25 में किसी भी धर्म को मानने और उसके अनुसार आचरण करने की बात कही गई है। गौरतलब है कि यूसीसी के माध्यम से 'निकाह' की प्रक्रिया पर रोक नहीं लगाई गई है। केवल एक व्यक्ति एक विवाह की बात कही गई है। इसलिए इसे अनुच्छेद 25 के विरूद्ध नहीं माना जा सकता।

पटना की जामा मस्जिद के इमाम मोहम्मद असद कासमी कहते हैं कि अगर कोई कानून इस्लाम या कुरान से टकराएगा तो हम उस कानून को नहीं मानेंगे। समाजवादी पार्टी के नेता सैयद तुफैल हसन मुसलमानों को भड़काने वाले वक्तव्य देने के लिए मशहूर हैं। उन्होंने यूसीसी पर कहा, 'यदि यूसीसी के नियम कुरान और हदीस से अलग हैं तो हम इसे स्वीकार नहीं करेंगे। अगर हमारे धर्म पर हमला हुआ तो हम किसी भी हद तक जाएंगे।' असम से सांसद बदरुद्दीन अजमल ने तो हास्यास्पद बयान ही दे डाला। वे कहते हैं कि जोशीले और ताकतवर युवा एक से ज्यादा शादी करते हैं तो इसमें हर्ज ही क्या है? इस्लाम में इसकी मनाही नहीं है।

देश के मुस्लिम समुदाय को समझना होगा कि यूसीसी समय की मांग है। हिंदुओं पर तो यह 1955 से ही लागू है। आज विश्व यूसीसी की ओर बढ़ रहा है। ■

(पाथेय डेस्क)

संत सम्मेलन में उठी मांग - समान नागरिक संहिता हो लागू

सनातन धर्म-ज्ञान को शिक्षा पद्धति में लाया जाए

जयपुर में गत 18 फरवरी को हुए अखिल भारतीय संत सम्मेलन में संतों ने मथुरा और काशी में भी अयोध्या की तरह भव्य मंदिरों का निर्माण करने की मांग की। संतों ने यह भी मांग की कि समान नागरिक संहिता (यूसीसी) पूरे भारत में लागू हो। संत समाज का मानना है कि ज्ञानवापी और श्रीकृष्ण जन्मभूमि विवाद का हल जल्द से जल्द निकलना चाहिए। इसके लिए न्यायालय से बाहर भी प्रयास होने चाहिए।

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के कोषाध्यक्ष स्वामी गोविंद देव गिरी जी महाराज ने सम्मेलन में कहा कि अयोध्या में भगवान श्रीराम के मंदिर का भव्य निर्माण हो रहा है। अब श्रीकृष्ण जन्मभूमि मथुरा और काशी में बाबा विश्वनाथ की बारी है। उन्होंने कहा कि इसके लिए सभी समुदायों से शांतिपूर्वक बातचीत की जाएगी। जमीन विवाद को बातचीत के स्तर पर सुलझाने का प्रयास किया जाएगा। अगर बातचीत से समझौता नहीं हुआ तो संत उग्र आंदोलन करेंगे।

गोविंद देव गिरी जी महाराज ने कहा कि हम दशकों तक यह नारा लगाते रहे ''रामलला हम आएंगे, मंदिर भव्य बनाएंगे।'' इस नारे का लोग मजाक उड़ाने लगे। लोग कहते थे कि मंदिर कब बनाएंगे, तारीख नहीं बताएंगे। लंबे समय तक यह सब चलता रहा, लेकिन संतों की संकल्प शक्ति का ही परिणाम है कि अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर का निर्माण हो रहा है और रामलला की प्राण प्रतिष्ठा भी हो गई है। सिर्फ संतों के लिए नहीं, बल्कि पूरे सनातन धर्म के लिए यह गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि हिन्दू धार्मिक शिक्षा देने में अभी पीछे हैं। इसके लिए भारत की शिक्षा पद्धति में 'हिन्दू धार्मिक शिक्षा' दिया जाना शामिल हो। जैसे बाकी धर्मों के लिए उनके शिक्षण संस्थान स्थापित करने और संचालन की अनुमति का उल्लेख संविधान में है, वैसा ही हिन्दुओं के लिए भी उल्लेख किया जा सकता है। सम्मेलन में गौ-सेवा और गौ-रक्षा पर भी एक प्रस्ताव पारित हुआ है।

जयपुर में आयोजित इस विश्व संत सम्मेलन में स्वामी गोविंद गिरी जी महाराज मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, जबकि अध्यक्षता श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के अध्यक्ष स्वामी नृत्य गोपाल दास जी के उत्तराधिकारी महामंडलेश्वर स्वामी कमल नयन दास जी महाराज (अयोध्या) ने की। विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकारी अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार, गोआ के श्री दत्त पद्मनाभ स्वामी ब्रह्मेशानंद आचार्य महाराज, रेवासा धाम के पीठाधीश्वर स्वामी राघवाचार्य जी महाराज, अमेरिका के स्वामी ब्रह्मनंद सरस्वती महाराज, स्पेन से स्वामी उमेश योगी महाराज, कैलिफोर्निया (अमेरिका) से स्वामी स्वालानंद महाराज, इंग्लैंड से राज रामेश्वर गुरुजी महाराज, आचार्य सोमेन्द्र महाराज सहित कई संत, महात्मा, आचार्य और महामंडलेश्वर भी शामिल हुए। कार्यक्रम का आयोजन श्री पंचखंड पीठ एवं माहेश्वरी समाज के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

राजस्थान में बना सूर्य नमस्कार का विश्व रिकॉर्ड

राजस्थान सरकार ने इस वर्ष 15 फरवरी को सूर्य सप्तमी के अवसर पर स्कूलों में सामूहिक सूर्य नमस्कार कार्यक्रम की घोषणा की थी,जिसका विरोध करते हुए कुछ मुस्लिम संगठनों ने अदालत में याचिका दायर कर दी। हालांकि यह याचिका हाईकोर्ट ने खारिज कर दी और 15 फरवरी को राजस्थान के हर जिले के स्कूलों में सूर्य नमस्कार हुआ, जिसका विश्व रिकॉर्ड भी बना। सवाल उठता है कि जब मुस्लिम समुदाय के बच्चे शिक्षा ग्रहण करने स्कूल जा रहे हैं तो सह शैक्षणिक गतिविधि से परहेज क्यों?

स्कूलों में पाठ्यक्रम शिक्षा के साथ ही बच्चों को बहुत सी गतिविधियों के माध्यम से व्यावहारिक ज्ञान भी दिया जाता है। सामूहिक सूर्य नमस्कार गतिविधि भी इसी का एक अंश है। परन्तु विरोध करने के आदी समुदाय-संगठन शिक्षा संस्थानों की गतिविधि को भी बिना वजह का मुद्दा बना लेते हैं। सूर्य नमस्कार का विरोध भी इसी प्रकार का निराधार विरोध है।

विश्व रिकॉर्डः 88 हजार स्कूलों के एक करोड़ से अधिक छात्रों ने लिया भाग

राजस्थान के सरकारी और निजी स्कूलों में सूर्य सप्तमी के अवसर पर सूर्य नमस्कार के सामूहिक अभ्यास का विश्व रिकॉर्ड बना। प्रदेश के 88 हजार से अधिक स्कूलों में एक करोड़ 14 लाख 69 हजार से अधिक छात्र-छात्राओं ने सूर्य नमस्कार किया। करीब 19 लाख शिक्षक एवं अन्य कर्मचारी भी आयोजन में शामिल हुए। इसमें एक करोड़ 33 लाख 69 हजार से अधिक लोगों ने सूर्य नमस्कार किया। वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स-लंदन ने इस रिकॉर्ड को मान्यता प्रदान की। जयपुर के इंदिरा गांधी पंचायती राज संस्थान में वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड्स-लंदन के श्री प्रथम भल्ला ने शिक्षा मंत्री मदन दिलावर को वर्ल्ड रिकॉर्ड का प्रमाण-पत्र सौंपा।

मुस्लिम समुदायों का तर्क है कि ''सूर्य नमस्कार में प्रणामासन, अष्टांगा नमस्कार इत्यादि क्रियाएं पूजा का ही एक रूप हैं, जबकि इस्लाम धर्म में अल्लाह के सिवाय किसी अन्य की पूजा स्वीकार्य नहीं है, लिहाजा मस्लिम समुदाय के लिए इसे किसी भी रूप या स्थिति में स्वीकार करना संभव नहीं है।'' हालांकि सूर्य नमस्कार योग की विधि है,पूजा की नहीं।

जमीयत उलेमा-राजस्थान की राज्य कार्यकारिणी ने 15 फरवरी से पहले इस संबंध में बैठक कर प्रस्ताव पारित किया,जिसमें मुस्लिम समुदाय से अपील की गई थी कि वे 15 फरवरी को अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजें और इस समारोह का बहिष्कार करें। उसके बाद इस मामले को लेकर राजस्थान मुस्लिम फोरम ने हाई कोर्ट में याचिका लगाई थी।

जयपुर स्थित अल्बर्ट हॉल के सामने हुए एक कार्यक्रम में 510 साधकों ने लगातार 108 सूर्य नमस्कार लगाए। इस कार्यक्रम में 8 वर्ष के बालक से लेकर 67 वर्ष के जगदीश नारायण ने भी 108 सूर्य नमस्कार कर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। राजस्थान में क्रीड़ा भारती द्वारा प्रदेश के सभी जिलों में कार्यक्रम किए गए।

राजस्थान नर्सिंग कौंसिल से सम्बद्ध राज्य के करीब 400 नर्सिंग संस्थानों के 60 हजार नर्सेज ने नूतन ऊर्जा के साथ सूर्य नमस्कार कार्यक्रम में सहभागिता दर्ज की। जयपुर में आयोजित एक कार्यक्रम में 2500 नर्सेज स्टाफ ने भाग लिया।

क्रीड़ा भारती के संयोजक मेघ सिंह ने बताया कि जयपुर स्थित चौगान में 5542 स्कूलों के 9.63 लाख विद्यार्थियों ने सूर्य नमस्कार किया। ■ *(हेमलता चतुर्वेदी)*

सरकार का मत

कोई कहता है कि हम सरकार के आदेश को नहीं मानते, तो वे स्वतंत्र हैं। ऐसे आयोजनों में कुछ बच्चे अनुपस्थित रहते हैं, अगर कोई शामिल नहीं होना चाहता तो नहीं आए। सूर्य नमस्कार पूजा पद्धति या धर्म नहीं है। ऐसे आयोजनों से धार्मिक भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचती। सरकार ने जो नियम बनाए हैं और आदेश दिए हैं, उसकी पालना जरूरी है।

-मदन दिलावर, *शिक्षामंत्री, राज.*

जयपुर के अल्बर्ट हॉल पर आयोजित कार्यक्रम

हल्द्वानी में हुई हिंसा सोची-समझी साजिश

अवैध अतिक्रमण हटाने पर किया उपद्रव

विगत 10 फरवरी को हल्द्वानी में कट्टरपंथी तत्वों द्वारा हिंसा का तांडव किया गया।

उत्तराखंड के हल्द्वानी में सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा करके बनाई गई इमारत मदरसा व मस्जिद को राज्य सरकार द्वारा बुलडोजर चलाकर हटा दिया गया था। नगर निगम द्वारा अतिक्रमण को हटाने के आधे घंटे बाद ही आगजनी हो गई और मस्जिद के आसपास स्थित घरों की छतों से पुलिसकर्मियों और नगर निगम के अफसरों पर पथराव होने लगा।

हिंसा की आग इतनी भयावह तरीके से फैली कि पूरे इलाके में दंगा हो गया, शहर छावनी में तब्दील हो गया और कर्फ्यू लगा दिया गया। 100 से अधिक वाहनों को जला दिया गया। भीड़ ने पेट्रोल बम से हमला किया। थाने पर हमला कर पुलिसवालों को जिंदा जलाने की कोशिश की गई। छः लोगों की मौत हो गई। सैकड़ों लोग घायल हो गए। बड़ी संख्या में मकानों व दुकानों में तोड़फोड़ की गई।

उल्लेखनीय है कि नगर निगम द्वारा कोर्ट के आदेश पर अतिक्रमण हटाया जा रहा था। वनभूलपुरा क्षेत्र में स्थित नजूल भूमि (जिस पर किसी का मालिकाना अधिकार नहीं हो) को अब्दुल मलिक ने अपने कब्जे में लेकर बगीचा के साथ ही अवैध मस्जिद व मदरसा बना लिया गया था। अतिक्रमण हटाने के लिए नोटिस भी पूर्व में दिया गया था।

बताया जाता है कि उपद्रवियों द्वारा तोड़फोड़ व आगजनी में 40 करोड़ से ज्यादा संपत्ति का नुकसान हुआ है।

मुख्य आरोपी अब्दुल मलिक बीती 24 फरवरी को गिरफ्तार किया जा चुका है। अब्दुल मलिक और और उसकी पत्नी सहित छह लोगों के खिलाफ धोखाधड़ी करने और आपराधिक साजिश रचने का एक मामला भी दर्ज किया गया है। पुलिस ने मलिक की संपत्ति को कुर्क कर लिया है तथा दंगे से हुए नुकसान की भरपाई के लिए मुआवजा दिए जाने हेतु उसे नोटिस दिया गया है। ■

विश्व हिंदू परिषद का वक्तव्य

केन्द्रीय महामंत्री श्री मिलिंद परांडे ने गत 10 फरवरी को कहा- देवभूमि में दैत्यों के आतंक को बर्दास्त नहीं किया जा सकता। माननीय उच्च न्यायालय के निर्णय की अनुपालना व स्थानीय शासन-प्रशासन के कार्यों में बाधा पहुँचाते हुए ड्यूटी पर तैनात महिला पुलिसकर्मियों के साथ थाने को घेर कर किये गए जानलेवा हमलों से सम्पूर्ण देश स्तब्ध है। अब समय आ गया है कि इन देश विरोधी हिंसक जिहादियों व उनके पैरोकारों के विरुद्ध ऐसी कार्यवाही हो जिससे इनकी आगे आने वाली पीढ़ी भी हिंसा, उपद्रव या किसी भी प्रकार की तोड़-फोड़ के बारे में सोच भी ना सकें।

विश्व हिन्दू परिषद उन सभी पुलिसकर्मियों व शासन-प्रशासन के लोगों के साथ खड़ा है जो हिंसा का शिकार हुए। मामले में सरकारी कार्यवाही की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि घटना में शामिल जिहादियों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही हो।

श्री परांडे ने मुस्लिम समुदाय को अपने भड़काऊ नेतृत्व से सावधान रह कर, समय रहते उससे किनारा करने की अपील भी की। उन्होंने कहा कि जिहादियों की पैरोकारी करने वाला मुस्लिम नेतृत्व, उनके समाज को आत्मघाती रास्ते ले जाने की कोशिश कर रहा है, जिससे सावधान रहना होगा। हमारा संकल्प है कि देवभूमि उत्तराखंड को किसी भी कीमत पर, हम दैत्य भूमि नहीं बनने देंगे।

महाभारत कालीन वार्णावत यानी आज के बागपत में ही है लाक्षागृह

अदालत ने भी लगाई मुहर, हिन्दुओं के पक्ष में दिया फैसला

बागपत (उत्तर प्रदेश) के बरनावा में स्थित ऐतिहासिक टीला 'दरगाह और कब्रिस्तान' नहीं, बल्कि 'महाभारत कालीन लाक्षागृह' की जमीन है। गत 5 फरवरी, 2024 को सिविल जज शिवम द्विवेदी की कोर्ट ने यह फैसला सुनाया। जमीन के इस टुकड़े पर पिछले 53 साल से विवाद चल रहा था। सिविल जज शिवम द्विवेदी ने मुस्लिम पक्ष के वाद को खारिज करते हुए हिंदू पक्ष को लाक्षागृह का मालिकाना हक दे दिया। कोर्ट ने हिंदू पक्ष को 100 बीघा जमीन के साथ-साथ मजार पर भी मालिकाना हक दिया है। 53 साल में मामले में कुल 875 तारीखों पर सुनवाई हुई। इस दौरान कुछ वादी एवं प्रतिवादियों की मौत भी हो गई।

महाभारत कालीन लाक्षागृह पर जताया था मुस्लिम पक्ष ने दावा

कोर्ट में पेश किए गए साक्ष्य के आधार पर माना गया कि वहां दरगाह व कब्रिस्तान की जमीन का होना किसी भी जगह राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज नहीं है। मुस्लिम पक्षकार मुकीम खान की तरफ से दावा किया गया था कि बरनावा में प्राचीन टीले पर शेख बदरूद्दीन की दरगाह और कब्रिस्तान है।

साक्ष्यों से स्पष्ट है - यह लाक्षागृह

बरनावा के लाक्षागृह स्थित संस्कृत विद्यालय के प्रधानाचार्य आचार्य अरविंद कुमार शास्त्री का कहना है कि यह ऐतिहासिक टीला महाभारत कालीन लाक्षागृह है। यहां सुरंग व अन्य अवशेष इसका प्रमाण हैं। महाभारत ग्रंथ में उल्लेख है कि लाक्षागृह एक भवन था जिसे दुर्योधन ने पांडवों के विरुद्ध एक षड्यंत्र के तहत उनके ठहरने के लिए बनाया था।

कश्मीरी पत्रकार का अंतरराष्ट्रीय समुदाय को कड़ा संदेश

"मैं मलाला नहीं, कश्मीर मेरी मातृभूमि का अभिन्न अंग, मैं पूर्णतः सुरक्षित"

जम्मू-कश्मीर की युवा पत्रकार और कार्यकर्ता याना मीर ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर उन सभी तत्वों को आड़े हाथ लिया जो अनावश्यक ही जम्मू-कश्मीर को हथियार बना कर भारत पर निशाना साधते रहे हैं। ब्रिटेन की संसद में आयोजित एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा, "भारत में वे पूर्णतः स्वतंत्र हैं और जम्मू-कश्मीर में पूरी तरह सुरक्षित हैं।" उन्होंने पाकिस्तान सहित अन्य ताकतों को आगाह किया कि वे जम्मू-कश्मीर के नाम पर भारत को विभाजित करने की कोशिश बंद कर दें। उन्होंने पाकिस्तान की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि वह मलाला यूसुफजई नहीं हैं, जिन्हें आतंकवाद से डरकर अपना देश (पाकिस्तान) छोड़ना पड़ा। वह भारत में स्वतंत्र और सुरक्षित हैं। उनके इस वक्तव्य पर खूब तालियां बजीं।

अंतरराष्ट्रीय मंच पर तालियों की यह गड़गड़ाहट याना मीर के वक्तव्य की ही सराहना नहीं है,बल्कि जम्मू-कश्मीर और भारत की सराहना है। जम्मू-कश्मीर में भी आम भारतीय ठीक उसी तरह जी रहा है,जैसे देश के बाकी राज्यों में।

याना मीर ने कहा, "मेरी मातृभूमि में, कश्मीर, जो कि भारत का हिस्सा है, मैं वहां रहती हूं। मुझे कभी भी भागकर आपके देश में शरण लेने की आवश्यकता नहीं होगी। मुझे मेरे देश, मेरी प्रगतिशील मातृभूमि को उत्पीड़ित कहकर बदनाम करने के लिए मलाला पर आपत्ति है। मैं सोशल मीडिया और अंतरराष्ट्रीय मीडिया के ऐसे सभी टूलकिट सदस्यों पर आपत्ति करती हूं, जिन्होंने कभी भी कश्मीर आने की जहमत नहीं उठाई, लेकिन वहां पर उत्पीड़न की मनगढन्त कहानियां गढ़ते हैं।"

याना मीर को यूके पार्लियामेंट द्वारा आयोजित 'संकल्प दिवस' में सम्मिलित होने के लिए बुलाया गया था। यहां उन्हें जम्मू-कश्मीर में विविधताओं के प्रयासों को बढ़ाया देने के लिए 'डायवर्सिटी एबेंसडर' पुरस्कार से नवाजा गया। कार्यक्रम में ब्रिटेन के सांसदों सहित अन्य देशों की करीब 100 जानी-मानी हस्तियों ने भाग लिया था।

सरसंघचालक जी द्वारा पूज्य आचार्य विद्यासागर जी को श्रद्धांजलि

आचार्य जी से काल सुसंगत मार्गदर्शन व उपदेश मिलता था

पूज्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज की स्मृति में बीती 25 फरवरी को आयोजित गुरु विनयांजलि कार्यक्रम में सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा, ''अत्यंत कठोर व्रताचरण तथा संपूर्ण वैराग्याचरण करने वाले आचार्य विद्यासागर जी हम सबके मार्गदर्शक तो थे ही, साथ ही वे राष्ट्र की बड़ी पूंजी थे।''

उन्होंने कहा, ''आचार्य विद्यासागर जी से पहली बार भेंट और चर्चा के बाद मेरे ध्यान में आया कि वे तर्क से तो बात रखते ही थे, उस तर्क के पीछे भी उनका एक सहज आत्मीयता का भाव होता था। मेरी उनकी पहली भेंट हुई थी। लेकिन, संत तो सबको अपना मानते हैं। हम भी यदि संतों की बात मान कर चलें तो सफलता अवश्य मिलती है।''

''उनका नहीं होना, मेरे लिए वैयक्तिक हानि की बात है। उनके पास आधा घंटा भी बैठें तो अगले वर्ष भर मन स्थिर रहता था। 'स्व' से शुरू करो, उसी आधार पर उन्नति होती है। अपने देश को भारत कहो, इंडिया मत कहो, यह उनका सदैव आग्रह होता था।''

''देश का उत्पादन जनता के द्वारा बढ़ाओ तो उनको रोजगार मिलेगा और देश को लाभ मिलेगा, ऐसा काल सुसंगत मार्गदर्शन एवं उपदेश मिलता था। व्यक्तिगत आचरण या राष्ट्र के विषय में उनकी बातें हम सब के लिए मार्गदर्शक हैं। उनके जाने से मेरी व्यक्तिगत हानि हुई है, उसका तो कोई उपाय नहीं। लेकिन, हम उनके बताए मार्ग पर सदैव चलें, तो हमेशा के लिए उन्नति कर सकते हैं। मैं उनकी स्मृति में अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करता हूँ।''

आचार्य श्री को पाथेय कण परिवार श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

महाराणा प्रताप टूरिस्ट सर्किट से युवा पीढ़ी में होगा शौर्य का संचार

वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप मेवाड़ ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष के प्रेरणास्त्रोत हैं। मेवाड़ का इतिहास पूरे विश्व के इतिहास से महत्वपूर्ण है। प्रताप गौरव केन्द्र महाराणा प्रताप की शौर्यगाथा को जन-जन तक पहुंचाने का ही एक प्रयास है। इसी दिशा में राजस्थान सरकार द्वारा महाराणा प्रताप के जीवन से जुड़े विभिन्न स्थलों चावण्ड, हल्दीघाटी, गोगुन्दा, कुम्भलगढ़, दिवेर व उदयपुर आदि को सम्मिलित करते हुए इस वर्ष के बजट में 'महाराणा प्रताप टूरिस्ट सर्किट' विकसित करने के लिए 100 करोड़ रुपये की घोषणा की गई है। वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप समिति, उदयपुर के अध्यक्ष पूर्व कुलपति प्रो. बीएल चौधरी ने कहा कि महाराणा प्रताप टूरिस्ट सर्किट सिर्फ पर्यटन दृष्टि से ही नहीं, अपितु नई पीढ़ी को भी भारत के गौरवशाली इतिहास के दर्शन का माध्यम होगा। यह सर्किट युवाओं में शौर्य का संचार करेगा। मातृभूमि के लिए सर्वस्व अर्पण करने वाले महाराणा प्रताप का इतिहास में उचित मान स्थापित करने की दिशा में यह महत्वपूर्ण कदम है।

भाषा का अभिमान

इतिहास के प्रकांड पंडित डॉ.रघुवीर प्राय: फ्रांस जाया करते थे। वे सदा फ्रांस के राजवंश के एक परिवार के यहाँ ठहरा करते थे। उस परिवार में एक ग्यारह साल की सुंदर लड़की भी थी। वह भी डॉ.रघुवीर की खूब सेवा करती थी।

एक बार डॉ. रघुवीर को भारत से एक लिफाफा प्राप्त हुआ। बच्ची को उत्सुकता हुई, देखें तो भारत की भाषा की लिपि कैसी है? उसने कहा-''अंकल लिफाफा खोलकर पत्र दिखाएँ।'' डॉ. रघुवीर ने टालना चाहा। पर बच्ची जिद पर अड़ गई। डॉ. रघुवीर को पत्र दिखाना पड़ा। पत्र देखते ही बच्ची का मुँह लटक गया-''अरे, यह तो अंग्रेजी में लिखा हुआ है। आपके देश की कोई भाषा नहीं है?''

डॉ. रघुवीर से कुछ कहते नहीं बना। बच्ची उदास होकर चली गई। माँ को सारी बात बताई। दोपहर में हमेशा की तरह सबने साथ-साथ खाना तो खाया, पर पहले दिनों की तरह उत्साह, चहक-महक नहीं थी।

गृहस्वामिनी बोली-'डॉ. रघुवीर, आगे से आप किसी और जगह रहा करें। जिसकी कोई अपनी भाषा नहीं होती, उसे हम फ्रेंच, बर्बर कहते हैं। ऐसे लोगों से कोई संबंध नहीं रखते।'

जिसकी कोई अपनी भाषा नहीं होती, उसे हम फ्रेंच, बर्बर कहते हैं। ऐसे लोगों से कोई संबंध नहीं रखते।' हम फ्रेंच लोग संसार में सबसे अधिक गौरव अपनी भाषा को देते हैं। क्योंकि हमारे लिए राष्ट्र प्रेम और भाषा प्रेम में कोई अंतर नहीं...।

गृहस्वामिनी ने उन्हें आगे बताया-''मेरी माता लोरेन प्रदेश के ड्यूक की कन्या थी। प्रथम विश्व युद्ध के पूर्व वह फ्रेंच भाषी प्रदेश जर्मनी के अधीन था। जर्मन सम्राट ने वहाँ फ्रेंच के माध्यम से शिक्षण बंद करके जर्मन भाषा थोप दी थी। फलत: प्रदेश का सारा कामकाज एकमात्र जर्मन भाषा में होता था, फ्रेंच के लिए वहाँ कोई स्थान न था। स्वभावत: विद्यालय में भी शिक्षा का माध्यम जर्मन भाषा ही थी। मेरी माँ उस समय ग्यारह वर्ष की थी और सर्वश्रेष्ठ कान्वेंट विद्यालय में पढ़ती थी।''

''एक बार जर्मन साम्राज्ञी कैथराइन लोरेन का दौरा करती हुई उस विद्यालय का निरीक्षण करने आ पहुँची। मेरी माता अपूर्व सुंदरी होने के साथ-साथ अत्यंत कुशाग्र बुद्धि भी थीं। सब बच्चियाँ नए कपड़ों में सजधज कर आई थीं। उन्हें पंक्तिबद्ध खड़ा किया गया था।''

''बच्चियों के व्यायाम, खेल आदि प्रदर्शन के बाद साम्राज्ञी ने पूछा कि क्या कोई बच्ची जर्मन राष्ट्रगान सुना सकती है? मेरी माँ को छोड़ कर वह किसी को याद न था। मेरी माँ ने उसे ऐसे शुद्ध जर्मन उच्चारण के साथ सुनाया जितना कोई जर्मन सुना पाता।''

साम्राज्ञी ने बच्ची से कुछ इनाम माँगने को कहा। बच्ची चुप रही। बार-बार आग्रह करने पर वह बोली-''महारानी जी, क्या जो कुछ मैं माँगू वह आप देंगी?''

साम्राज्ञी ने उत्तेजित होकर कहा- ''बच्ची, मैं साम्राज्ञी हूँ। मेरा वचन कभी झूठा नहीं होता। तुम जो चाहे माँगो।'' इस पर मेरी माता ने कहा- ''महारानी जी, यदि आप सचमुच वचन पर दृढ़ हैं तो मेरी केवल एक ही प्रार्थना है कि अब आगे से इस प्रदेश में सारा काम एकमात्र फ्रेंच में हो, जर्मन में नहीं।''

इस सर्वथा अप्रत्याशित माँग को सुनकर साम्राज्ञी पहले तो आश्चर्यकित रह गई, किंतु फिर क्रोध से लाल हो उठीं। वे बोली ''लड़की, नेपोलियन की सेनाओं ने भी जर्मनी पर कभी ऐसा कठोर प्रहार नहीं किया था जैसा आज तूने शक्तिशाली जर्मनी साम्राज्य पर किया है। साम्राज्ञी होने के कारण मेरा वचन झूठा नहीं हो सकता, पर तुम जैसी छोटी सी लड़की ने इतनी बड़ी महारानी को आज पराजय दी है, वह मैं कभी नहीं भूल सकती। जर्मनी ने जो अपने बाहुबल से जीता था उसे तूने अपनी वाणी मात्र से लौटा लिया। मैं भलीभाँति जानती हूँ कि अब आगे लारेन प्रदेश अधिक दिनों तक जर्मनों के अधीन न रह सकेगा।'' यह कहकर महारानी अतीव उदास होकर वहाँ से चली गई। गृहस्वामिनी ने कहा-''डॉ.रघुवीर, इस घटना से आप समझ सकते हैं कि मैं किस माँ की बेटी हूँ। हम फ्रेंच लोग संसार में सबसे अधिक गौरव अपनी भाषा को देते हैं। क्योंकि हमारे लिए राष्ट्र प्रेम और भाषा प्रेम में कोई अंतर नहीं...। हमें अपनी भाषा मिल गई, तो आगे चलकर हमें जर्मनी से स्वतंत्रता भी प्राप्त हो गई।''

आचार्य रघुवीर (30 दिसम्बर,1902-14 मई,1963) महान भाषाविद्, प्रख्यात विद्वान, राजनीतिक नेता तथा भारतीय धरोहर के मनीषी थे। वे महान कोशकार, शब्दशास्त्री तथा भारतीय संस्कृति के उन्नायक थे। एक ओर उन्होंने कोशों की रचना कर राष्ट्रभाषा हिंदी का शब्द भंडार संपन्न किया, तो दूसरी ओर विश्व में विशेषत: एशिया में फैली हुई भारतीय संस्कृति की खोज कर उसका संग्रह एवं संरक्षण किया। राजनीतिक नेता के रूप में उनकी दूरदर्शिता, निर्भीकता और स्पष्टवादिता कभी विस्मृत नहीं की जा सकती।

(संकलित)

गोकशी करने वालों पर सरकार ने की बड़ी कार्रवाई

मकानों पर चला बुलडोजर, 30 गिरफ्तार

राजस्थान के अलवर जिले में व्यापक पैमाने पर न केवल गोकशी की जा रही थी, वरन् बीफ (गौमांस) की मंडी तक लगाई जाने के समाचार थे। राजस्थान की नई भाजपा सरकार ने इसे गंभीरता से लेते हुए गोकशी करने वालों पर बड़ी कार्रवाई की है। अलवर के किशनगढ़वास में रुंध गिदावड़ा स्थान पर बीती 20 फरवरी को गोकशी में लिप्त लोगों पर कार्रवाई करते हुए 30 लोगों को गिरफ्तार किया गया तथा उनके 12 मकानों को बुलडोजर चलाकर ढहा दिया गया।

एडीएम सुरेन्द्र सिंह यादव ने बताया कि गोकशी करने वालों ने 200 बीघा सरकारी जमीन पर कब्जा कर 70 बीघा में गेंहू व सरसों की फसल उगा रखी थी। प्रशासन ने फसल पर बुलडोजर चलाकर नष्ट कर दिया।

पुलिस अधीक्षक अनिल बेनीवाल के अनुसार वहां गोकशी के लिए लाई गई एक दर्जन गायों को पैर बांधकर रखा हुआ था। उन्हें मुक्त कराकर गोशाला भिजवाया गया। आरोपियों के बिजली के 5 घरेलू कनेक्शन काटे गए हैं तथा 5 पोल व 2 ट्रांसफार्मर भी वहां से हटाए गए हैं। आरोप है कि यह गोकशी का आपराधिक कार्य तहसीलदार, पुलिस, भू-अभिलेख निरीक्षक, पटवारी, ग्राम विकास अधिकारी आदि के संरक्षण में चल रहा था। प्रशासन द्वारा इन सब की भूमिका की जांच की जा रही है। चार पुलिसकर्मियों को सस्पेंड करते हुए किशनगढ़ के थाने को लाइन हाजिर कर दिया गया है। राजस्थान के वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री संजय शर्मा ने वहां जगह-जगह गोकशी के अवशेषों को देखकर आश्चर्य जताया। क्षेत्र के सामाजिक संगठन गोकशों पर कार्रवाई करने की मांग करते रहे हैं। पुलिस को मामले की जानकारी मिलते ही गांव के पुरुष गांव छोड़कर फरार हो गए थे।

प्राप्त जानकारी के अनुसार गोकशी व गोतस्कर का कार्य वहाँ लम्बे समय से चल रहा था। कांग्रेस सरकार के अधिकारियों व मंत्रियों को इस बात की जानकारी थी। उनके निर्देशों के चलते ही प्रशासन व पुलिस ने अब तक इन अपराधियों पर कोई कार्रवाई नहीं की। अलवर के रामगढ़, गोविंदगढ़, तिजारा, भिवाड़ी सहित कई जगहों पर भी खुलेआम गोकशी व गोतस्करी होने के समाचार लगातार आते रहे हैं।

मतांतरण रुकवाया, चंडीगढ़ का पादरी दे रहा था पैसा

भरतपुर में ईसाई मिशनरियों द्वारा लगभग 400 गरीब लोगों को प्रलोभन देकर ईसाई बनाने का प्रयास किया जा रहा था। सूचना मिलने पर विश्व हिन्दू परिषद व बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने हंगामा कर मतांतरण रुकवाया। इनके द्वारा पुलिस में मामला दर्ज कराकर आरोप लगाया गया है कि कुंवर सिंह व सिद्धार्थ गौतम चंडीगढ़ के किसी ईसाई पादरी से पैसा लेकर मतांतरण कराने में लगे थे।

भरतपुर के घना रोड स्थित सोनार हवेली में बीती 11 फरवरी को लगभग 400 गरीब हिन्दुओं को प्रलोभन और दबाव से ईसाई बनाने के लिए चंगाई सभा का आयोजन किया गया था। आरोप लगाया गया है कि वहां हिंदू देवी-देवताओं की बुराई करते हुए उन्हें गालियां दी जा रही थी। कोई धार्मिक किताब हाथ में लेकर कसम दिलाकर धर्म बदलवाया जा रहा था।

सभा में आई महिलाओं ने बताया हमें 500-500 रुपए देने का आश्वासन दिया गया था। विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकर्ताओं ने लगभग 20 लोगों को पकड़ कर पुलिस को सौंपा, जिन्हें हिरासत में ले लिया गया। एडिशनल एसपी भूपेन्द्र शर्मा ने बताया कि धार्मिक भावनाएं आहत करने की रिपोर्ट पर दो आरोपियों पर नामजद एफआईआर दर्ज की गई है।

पुलिस ने दोनों आरोपियों कुंवर सिंह तथा सिद्धार्थ गौतम को गिरफ्तार किया है। पुलिस जांच में पता चला कि आरोपी कुंवर सिंह को चंडीगढ़ का ईसाई पादरी प्रोफेट बिजेंद्र हर माह एक लाख रुपए देता था। कुंवर सिंह को एक माह में चार सभाएं कर मतांतरण का कार्य करना होता था। आरोपी आर्थिक रूप से कमजोर लोगों की सहायता कर उनके मतांतरण का कार्य 2020 से भरतपुर में कर रहा था।

स्वाधीनता के 75 वर्ष बाद भी मुसलमान भारतीय नहीं हुआ : इंद्रेश कुमार

'यूनिफॉर्म सिविल कोड' किसी की स्वाधीनता पर प्रतिबंध नहीं हैं। सबके लिए समान कानून होना ही चाहिए। इस कानून के बनने से किसी भी धर्म और जाति के लोगों की आजादी समाप्त नहीं होगी और न ही किसी के व्यक्तिगत जीवन पर कोई असर होगा। देश के विकास के लिए समान नागरिक संहिता अनिवार्य है। इससे सभी नागरिकों के बीच समानता की भावना पैदा होगी। विभिन्न धर्मों और समुदायों के बीच आपसी समझ और सद्भावना बढ़ेगी।

उक्त उद्गार संघ की अ.भा.कार्यकारिणी सदस्य इंद्रेश कुमार ने व्यक्त किए। वे गत 7 फरवरी को मालवीय नगर स्थित पाथेय भवन के सभागार में राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच (फेन्स) राजस्थान चैप्टर की ओर से 'एक देश, एक कानून' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बोल रहे थे।

उन्होंने ये भी कहा कि हिन्दुस्तान में एक पॉलिटिकल फैशन हैं, कुछ भी लागू करिए, हर बार यही प्रश्न क्यों खड़ा होता हैं कि मुसलमानों का क्या होगा? कोई ये क्यों नहीं कहता कि हिन्दुस्तानियों का क्या होगा? ये दुर्भाग्यपूर्ण है कि बाकी सब तो भारतीय हो गए लेकिन स्वाधीनता के 75 वर्षों बाद भी मुसलमान अब तक भारतीय नहीं हुआ। उनको मुसलमान ही बनाकर रखा हुआ हैं और जब तक बना रहेगा ये परेशानी खड़ी ही रहेगी। जिस दिन मुस्लिम भारतीय हो जाएंगे, उस दिन इनके और इस देश के रोग खत्म हो जाएंगे।

सूर्या फाउण्डेशन की भारत दर्शन यात्रा

सूर्या फाउण्डेशन युवा विकास हेतु देश भर में व्यक्तित्व विकास शिविरों का आयोजन करता है। इन शिविरों में चयनित युवाओं को संस्था स्कॉलरशिप देती है, साथ ही भारत दर्शन यात्रा के तहत भारत को देखने का अवसर भी प्रदान करती है।

इसी श्रृंखला में भारत दर्शन यात्रा इस बार पिछले दिनों राजस्थान पहुँची। यात्रा में 10 राज्यों के 50 युवाओं ने जैसलमेर तथा जोधपुर के ऐतिहासिक व सांस्कृतिक स्थलों का भ्रमण कर जानकारी साझा की।

संस्था के चेयरमैन पद्मश्री जयप्रकाश जी का कहना था कि आज की युवा पीढ़ी जब भारत को देखेगी, तभी वह भारत से जुड़ेगी। इसीलिए भारत यात्रा संस्था के हर प्रशिक्षण का हिस्सा है। इस यात्रा में आये सभी युवा अगले वर्ष होने वाले व्यक्तित्व विकास शिविरों में एक प्रशिक्षक की भूमिका में भाग लेंगे।

सोशल मीडिया पर 'मिशन कन्यादान' चलाकर पिछड़े वर्ग की बेटी के किए हाथ पीले

निवाई (टोंक) की ग्राम पंचायत बड़ा गांव के नेत्रहीन दम्पत्ती की बेटी के विवाह के लिए सर्व समाज ने सामाजिक समरसता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है। यह दम्पत्ती अपनी बेटी का विवाह करने में आर्थिक रूप से सक्षम नहीं था। अपनी पीड़ा को उन्होंने जब गांव के सरपंच विनोद सांखला को बतायी तो उन्होंने सोशल मीडिया के माध्यम से 'मिशन कन्यादान' की शुरुआत की।

सभी के सहयोग से लगभग 2.50 लाख इकट्ठे हुए जिन्हें गांव वालों ने पिछड़े वर्ग की दम्पत्ती के परिजनों को देकर उनकी बेटी सावित्री का विवाह संम्पन्न करवाया।

'मेरा भारत-विकसित भारत' भाषण प्रतियोगिता

विद्या भारती के पूर्व छात्र ने राज्य स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया

युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय तथा नेहरू युवा केन्द्र द्वारा 'मेरा भारत-विकसित भारत@2047' विषय पर प्रदेश के सभी जिलों में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इन प्रतियोगिताओं में जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त वक्ताओं ने जयपुर के सुबोध कॉलेज में बीती 18 फरवरी को राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लिया। इसमें

आदर्श विद्या मंदिर, भुसावर (भरतपुर) के पूर्व छात्र अंकित भारद्वाज ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। विजेता प्रतिभागी को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न तथा एक लाख रुपये की राशि का चेक भेंट किया गया। अंकित वर्तमान में राजकीय सेवा (सचिवालय) में कार्यरत है। विजेता अंकित ने उक्त राशि में से 5 हजार की राशि गंभीर बीमारी से पीड़ित मसारी गांव के हृदयांश शर्मा को भेंट करने की घोषणा की। राज्य स्तर पर विजेता रहे प्रतिभागी अब दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाली प्रतियोगिता में भाग लेंगे।

पांचवां अखिल भारतीय चित्र भारती फिल्मोत्सव 23 से 25 फरवरी को हरियाणा के पंचकुला में आयोजित। उद्घाटन के अवसर पर हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर मंच पर। साथ में हैं बाएं से क्रमश: फिल्म निर्देशक चंद्रप्रकाश द्विवेदी, विवेक अग्निहोत्री व पंजाबी गायक दलेर मेंहदी आदि।

प्रताप गौरव केन्द्र 'राष्ट्रीय तीर्थ' और एएसजी आई हॉस्पिटल के संयुक्त तत्वावधान में उदयपुर में नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर।

भरतपुर में श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर तिलक प्रौढ़ व्यवसायी शाखा के स्वयंसेवकों द्वारा वाल्मीकि समाज के सफाई कर्मचारियों का सम्मान।

द्वितीय सरसघंचालक श्रीगुरुजी की जन्मतिथि की पूर्व संध्या पर जयपुर स्थित संघ कार्यालय 'भारती भवन' में रक्तदान शिविर।

जरूरतमंद परिवारों की बालिकाओं के शैक्षिक उन्नयन के लिए सेवा भारती, दौसा द्वारा संगम विहार कालोनी में छात्रावास का शिलान्यास करते जयपुर प्रांत प्रचारक श्री बाबूलाल व भूमिदान दाता श्री सुरेश बोहरा।

सेवा भारती, विद्याधर नगर के सहयोग से किशन बाग सेवा (कच्ची) बस्ती में सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारम्भ

सेवा भारती समिति, नागौर द्वारा आयोजित प्रथम सर्वजातीय सामूहिक विवाह सम्मेलन में 3 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे।

आगामी पक्ष के विशेष अवसर

16 से 31 मार्च, 2024
(फाल्गुन शुक्ल 7 से चैत्र कृष्ण 6 तक)

जन्म दिवस

फाल्गुन शु. 8 (17 मार्च)- संत दादूदयाल जयंती
21 मार्च (476) - खगोलशास्त्री आर्यभट्ट जयंती
23 मार्च (1858) - क्रांतिकारी सूफी अम्बाप्रसाद जयंती
23 मार्च (1910) - राममनोहर लोहिया जयंती
फा. पूर्णिमा(25 मार्च) -महाराणा प्रताप का गोगून्दा में राजतिलक
फा. पूर्णिमा(25 मार्च) - चैतन्य महाप्रभु जयंती, मीरा जयंती
चैत्र कृ. 2(27 मार्च) - संत तुकाराम जयंती
30 मार्च (1897) - अप्पाजी जोशी जयंती
चैत्र कृ.6 (31 मार्च) - संत एकनाथ जयंती

बलिदान दिवस / पुण्यतिथि

20 मार्च (1858) - रानी अवन्तीबाई लोधी का बलिदान
23 मार्च (1931) - भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु का बलिदान
25 मार्च (1931) - गणेश शंकर विद्यार्थी का बलिदान
29 मार्च (1917) - सरदार बलवंतसिंह व 5 क्रांतिकारियों का बलिदान

महत्वपूर्ण घटनाएं / अवसर

18 मार्च (1944) -आजाद हिंद फौज का भारत के मणिपुर में प्रवेश
20 मार्च- विश्व खुशहाली दिवस, **21 मार्च** - विश्व वानिकी दिवस
22 मार्च - विश्व जल संरक्षण दिवस **24 मार्च** - विश्व टीबी दिवस (क्षय रोग), **27 मार्च** - विश्व रंगमंच दिवस, **30 मार्च**- राजस्थान स्थापना दिवस

सांस्कृतिक पर्व

24 मार्च- होली, **25 मार्च**- धुलण्डी, गणगौर पूजा प्रारंभ

'पाथेय कण' पाक्षिक सम्बन्धी विवरण

घोषणा पत्र-4 (नियम 8 के अनुसार)

1. प्रकाशन स्थान	**जयपुर**
2. प्रकाशन अवधि	**पाक्षिक**
3. मुद्रक का नाम	**माणकचन्द**
(क्या भारत का नागरिक है)	**हाँ**
पता	**4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-17**
4. प्रकाशक का नाम	**माणकचन्द**
क्या भारत का नागरिक है	**हाँ**
पता	**4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017**
5. सम्पादक का नाम	**रामस्वरूप अग्रवाल**
क्या भारत का नागरिक है	**हाँ**
पता	**72/25 मानसरोवर, जयपुर-302020**

6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र की समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हों- **कोई नहीं**

मैं माणकचन्द एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 1 मार्च, 2024 *(प्रकाशक के हस्ताक्षर)*

उत्तर : जाचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं:- 1. सुभाष चन्द्र बोस 2. डीग (भरतपुर) 3. 56वें 4. साहित्य 5. विद्याधर भट्टाचार्य 6. चन्द्रगुप्त द्वितीय 7. कर्नाटक 8. भारत 9. तासी 10. प्रतापगढ़

बाल प्रश्नोत्तरी 48परिणाम: 1.क 2.ख 3.ग 4.क 5.क 6.क 7.ख 8.ग 9.क 10.क

पंचांग- फाल्गुन (शुक्ल पक्ष) युगाब्द 5125, वि.सं. 2080, शाके 1945 (11 से 25 मार्च, 2024)

फुलेरा दोज-12मार्च, **बाबा श्याम का 10 दिवसीय मेला**- 12 से 21 मार्च, **पंचक समाप्त**-12मार्च (रात 8:29बजे), **विनायक चतुर्थी**-13 मार्च, **रोहिणी व्रत** (जैन)-16 मार्च, **होलाष्टक**-17 से 25 मार्च, **अष्टानिका महापर्व** (जैन)-17 से 25मार्च, **आमला एकादशी व्रत** (स्मार्त-वैष्णव)-20 मार्च, **आमला एकादशी व्रत**(निम्बार्क)- 21 मार्च, **प्रदोष व्रत**-22 मार्च, **चांदपूर्णिमा व्रत, होलिका दहन**-24 मार्च, **सत्यनारायण व्रत**-25 मार्च, **घुलण्डी व गणगौर पूजा प्रारंभ**-25 मार्च

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 11-12 मार्च को **मीन** राशि में, 13-14 मार्च **मेष** राशि में, 15-16 मार्च उच्च की राशि **वृष** में, 17 से 19 मार्च **मिथुन** राशि में, 20-21 मार्च स्वराशि **कर्क** में, 22 से 24 मार्च **सिंह** राशि में तथा 25 मार्च को **कन्या** राशि में गोचर करेंगे।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष में **गुरु** व **शनि** यथावत मेष व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी क्रमशः मीन व कन्या राशि में स्थित रहेंगे। **बुध** व **शुक्र** क्रमशः यथावत मीन व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** 14 मार्च को दोपहर 12:36 बजे कुंभ से मीन राशि में प्रवेश करेंगे। **मंगल**-15 मार्च को सायं 6:08 बजे मकर से कुंभ राशि में प्रवेश करेंगे।

क्या आप जानते हैं?

■ **उग्रम**

– रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन ने एक निजी फर्म द्वारा संयुक्त रूप से असॉल्ट राइफल 'उग्रम' विकसित की है। इसकी प्रभावी रेंज 500 मीटर है तथा वजन चार किलोग्राम है।

■ **हनुमान एआई मॉडल**

– आईआईटी बॉम्बे और रिलायंस इंफोकॉम ने मिलकर 'हनुमान' नाम का एआई मॉडल बनाया है। यह 11 लोकल लैंग्वेज के काम कर सकता है। इसे गवर्नेंस, मॉडल हेल्थ, एजुकेशन और फाइनेंस जैसे सेक्टर के लिए डिजायन किया गया है।

■ **सम्मक्का सरलम्मा जतारा**

– सम्मक्का सरलम्मा जतारा, तेलंगाना में मनाया जाने वाला एशिया का सबसे बड़ा एक हिंदू जनजातीय देव उत्सव है।

दिवस

विश्व वानिकी दिवस : वन संपदा का संरक्षण आदि को लेकर आम जन में व्यापक जागरूकता लाने के लिए प्रतिवर्ष 21 मार्च को यह दिवस मनाया जाता है। वर्ष 1971 से इसे मनाने की शुरुआत हुई।

21 मार्च

विश्व जल संरक्षण दिवस : विश्वभर के सभी लोगों को स्वच्छ जल उपलब्ध करवाने तथा उसकी महत्ता की ओर सभी का ध्यान केन्द्रित कराना ही इस दिवस का मुख्य उद्देश्य है। 1993 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने इसे प्रतिवर्ष मनाने का निर्णय लिया।

22 मार्च

गणित पहेली

प्रश्न चिह्न के स्थान पर कौन सी संख्या लिखी जाएगी।

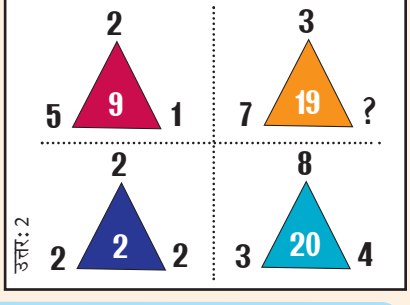

उत्तर: 2

मोबाइल कमजोर कर रहा है रिश्तों का नेटवर्क

हर समय सोशल मीडिया पर लगे रहना, बच्चों को मोबाइल देकर चुप करना, बार-बार वाट्सएप चैक करना, रील्स, पोस्ट या वीडियों डालना यह सब लक्षण मोबाइल एडिक्शन के हैं। इसके कारण हमारे आपसी रिश्ते दिनों-दिन कमजोर होते जा रहे हैं। व्यक्ति अकेलेपन का शिकार हो रहा है। उसका शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य दोनों प्रभावित हो रहे हैं। यह कहना है जयपुर मनोचिकित्सक केन्द्र अधीक्षक डॉ. ललित बत्रा का। डॉ.बत्रा का यह भी कहना है कि पिछले कुछ वर्षों में इस प्रकार के मामलों में लगातार वृद्धि हुई है।

कुकिंग टिप्स

सब्जी की ग्रेवी का कलर लाल करने के लिए लाल मिर्च पाउडर की जगह थोड़ा सा चुकंदर घिस कर डालें। इससे सब्जी का रंग और स्वाद दोनों अच्छे लगेंगे।

घरेलू नुस्खा

अदरक के एक छोटे टुकड़े को पानी में उबाल कर शहद के साथ खाया जाए तो यह कफ, गले की खराश के साथ-साथ गले की सूजन और जलन में राहत देता है।

गीता- दर्शन

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।।

(2/61)

हे अर्जुन ! साधक को चाहिए कि वह सम्पूर्ण इन्द्रियों को वश में करके मेरे ध्यान में बैठे, क्योंकि जिस पुरुष की इन्द्रियां वश में होती है, उसी की बुद्धि स्थिर हो जाती हैं।

आओ संस्कृत सीखें-33

■ वही रटता रहता है। उक्तम् एव वदति सः।
■ अन्यथा बहुत कष्ट होगा। अन्यथा बहु कष्टम्।

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान है?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें- **सामान्य**- यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ** - यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम**- यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. सिंगापुर में स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार का गठन किसने किया था?
2. राजस्थान के किस जिले को 'जल महलों' की नगरी कहा जाता है?
3. किस संशोधन के तहत गोआ को पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया था?
4. ज्ञानपीठ पुरस्कार किस क्षेत्र में दिया जाता है?
5. जयपुर शहर की योजना किस वास्तुकार ने बनाई थी?
6. महरौली का लौह स्तम्भ किस शासक से संबंधित है?
7. अलमाटी बांध किस राज्य में स्थित है?
8. विश्व का दूसरा बड़ा स्टील उत्पादक देश कौन सा है?
9. सूरत (गुजरात) किस नदी के तट पर स्थित है?
10. गौतमेश्वर धाम राजस्थान के किस जिले में स्थित है?

उत्तर इसी अंक में...

बोधकथा

व्यक्तित्व निर्माण से राष्ट्र निर्माण

विनोबा भावे के पास कुछ छात्र राष्ट्र निर्माण का सूत्र पाने की भावना से पहुँचे। विनोबा जी ने उन युवकों को सूत्र देने से पूर्व कहा- देखो! मेरे पास कुछ लकड़ी के पासे हैं, तुम्हें इनसे भारत का नक्शा बनाना है। जब बन जाये, तब मैं तुम्हें राष्ट्र निर्माण का सूत्र बताऊँगा। लकड़ी के छोटे-छोटे पासों से नक्शा बनाना बड़ा कठिन काम था।

सभी छात्र पासों से भारत का नक्शा बनाने में लग गये, पर किसी को कुछ समझ में नहीं आया। एक छात्र ने गलती से पासे को पलटा, तो देखा उसमें मानव शरीर की आकृति थी। उसने सभी को पलट कर देखा, तो किसी में हाथ, किसी में ऊँगली, तो किसी में पाँव थे। उसने सभी पासों को मानव शरीर बनाने के लिए यथास्थान पर लगा दिया। जब शरीर की आकृति पूरी हुई, तो सभी पासों को उनके स्थान पर पलट दिया। इंसान का शरीर भारत के नक्शे में परिवर्तित हो गया। विनोबा जी ने कहा- मैं तुम्हें यही सूत्र देता हूँ '' भारत का निर्माण करना चाहते हो, तो व्यक्ति का निर्माण करो। व्यक्ति के निर्माण से ही समाज का निर्माण होगा और समाज से ही राष्ट्र का निर्माण होगा।''

वर्ग पहेली

वर्गों में सोलह संस्कारों में से दस संस्कारों के नाम दिए हुए हैं। उनके नाम खोजिए व अपनी बुद्धि का परीक्षण कीजिए

ग	र्भा	धा	न	च	न	अ
ब	जा	जा	व	र्म	द	न्न
न	त	ना	स	सं	छे	प्रा
य	क	म	पुं	प	र्ण	श
न	र्म	क	ड़ा	चू	क	न
प	त	र	वि	वा	ह	र
उ	श्री	ण	वे	दा	रं	भ

उत्तर : गर्भाधान, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, चूड़ाकर्म, उपनयन, वेदारंभ, समावर्तन, विवाह

जीतें पुरस्कार अब दूसरी और तीसरी बार भी

बाल प्रश्नोत्तरी - 50

बाल मित्रों, 1 जनवरी का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 7976582011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 को प्रमाण-पत्र तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। **लगातार 5 बार उत्तर सही पाए जाने पर विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - 20 मार्च, 2024**

1. जॉर्जिया मेलोनी किस देश की प्रधानमंत्री हैं?
   (क) इटली (ख) नीदरलैंण्ड (ग) पोलैंड (घ) इंग्लैण्ड
2. शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास की अ.भा.बैठक कहाँ आयोजित हुई?
   (क) जोधपुर (ख) जयपुर (ग) अजमेर (घ) बीकानेर
3. घुमंतू बस्ती में लगे रोजगार मेले में कितने लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया गया ?
   (क) 150 (ख) 100 (ग) 200 (घ) 300
4. राम मंदिर के लिए 48 राजसी घंटियां कहां के कारीगरों ने तैयार की हैं?
   (क) केरल (ख) तमिलनाडु (ग) जोधपुर (घ) जयपुर
5. श्रीराम मंदिर निधि समर्पण अभियान में देश के कितने लाख गांवों से सम्पर्क किया गया?
   (क) 5.37 लाख (ख) 5.50 लाख (ग) 5.60 लाख (घ) 5.45 लाख
6. जनवरी माह में किस स्थान पर शबरी पूजन के कार्यक्रम आयोजित हुए?
   (क) भीलवाड़ा (ख) बिजोलिया (ग) बूंदी (घ) कोटा
7. हेमू कालाणी की स्मृति में किस वर्ष में डाक टिकट जारी किया गया?
   (क) 2021 (ख) 1980 (ग) 1983 (घ)1985
8. भारत-पाक युद्ध (1971) में कितने पाक सैनिकों ने आत्म-समर्पण किया ?
   (क) 93 हजार (ख) 80 हजार (ग) 95 हजार (घ) 85 हजार
9. 34वें डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान से किसे सम्मानित किया गया?
   (क) विजय शंकर मेहता (ख) विजय शुक्ल(ग) विजय शर्मा (घ) विजय त्रिपाठी
10. संघ योजना से चित्तौड़ प्रांत में कितने गांवों को प्रभात ग्राम घोषित किया है?
    (क) 18 (ख) 21 (ग) 22 (घ) 20

रास्ता खोजो

सांप को झाड़ियों तक पहुँचाने में मदद कीजिए

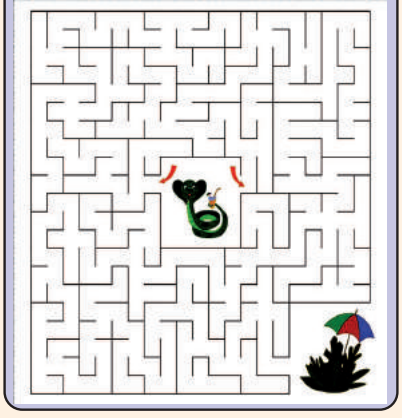

बाल प्रश्नोत्तरी-48 के परिणाम

अंकित नेहल दिव्यांश गीतेश लक्की

1. अंकित शर्मा, बापी, दौसा
2. नेहल कुमावत, निम्बाहेड़ा, चित्तौडगढ़
3. दिव्यांश शर्मा, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर
4. गीतेश पांचाल, पुष्कर, अजमेर
5. लक्की मालव, नया गांव, कोटा
6. देव मित्तल, कटरा, नदबई, भरतपुर
7. मनीष कुमार, सुथारों की गली, वागरा, जालोर
8. भागचन्द जाट, बोरड़ा, शाहपुरा
9. गीतिका कुमावत, यूनिवर्सिटी रोड, उदयपुर
10. आदित्य सैनी, अभेड़ा मेन रोड, नान्ता, कोटा

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी - 50)

(अपनी पासपोर्ट फोटो अवश्य वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( )3.( )4.( ) 5.( )6. ( )7.( )8.( ) 9.( )10.( )

नाम.....कक्षा.....पिता का नाम.....

उम्र..... पूर्ण पता.....

.....पिन.....मोबाइल.....

SURYA FOUNDATION

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063, Tel. : 011-25251588, 25253681
Email : interview@suryafoundation.org Website : www.suryafoundation.org

सूर्या फाउण्डेशन युवाओं के समग्र विकास तथा प्रशिक्षण के लिए अब एक जानी-मानी संस्था बन चुकी है। इसका प्रमुख उद्देश्य है देश के प्रति निष्ठा रखते हुए अनेक तरह के उत्तरदायित्व निभाने के लिए तेजस्वी, लगनशील तथा धुन के पक्के नवयुवकों का निर्माण करना और उन्हें समाजसेवा के काम में जोड़ना।

इन्टरव्यू में चयन हो जाने के बाद सूर्या साधना स्थली कैंपस में छः माह की ट्रेनिंग दी जाएगी। उसके बाद एक साल के लिए On Job Training (OJT) रहेगी।

संघ के संस्कारों में पले-बढ़े, सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाले, शारीरिक रूप से सक्षम युवकों के सूर्या फाउण्डेशन में प्रवेश हेतु निम्न categories में इंटरव्यू होगा–

Post	Experience	Age Between	6 months Initial Training + 1 year OJT	After Training CTC
CA	IPCC / MTER	18-25	3 - 4 L Per Annum	As per Performance
	Fresher	22-30	5 - 6 L Per Annum	- do -
	Experienced (upto 5 years)	25-35	6 - 8 L Per Annum	- do -
	Experienced (above 5 years)	25-35	9 - 12 L Per Annum	-do -
Engineers, Fresher & Experienced	B.Tech (IIT)	22-30	7.5 - 9 L Per Annum	- do -
	B.Tech (NIT)	22-30	4.5 - 6 L Per Annum	- do -
	B.Tech (Other Institutes)	22-30	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
	M.Tech (IIT)	22-30	8.5 - 10 L Per Annum	- do -
	M.Tech (NIT)	22-30	5.5 - 7 L Per Annum	- do -
	M.Tech (Other Institutes)	22-30	3.6 - 4 L Per Annum	- do -
MBA	MBA (IIT + IIM)	22-30	15 L + Per Annum	- do -
	MBA (IIM)	22-30	12 - 15 L Per Annum	- do -
	MBA (Other Institutes)	22-30	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
Post Graduate & Graduate	MCA, B.Ed., M.Ed., MSW, M.Sc., M.Com., M.A. *(Freshers / Experience) Ph.D. **	18-25	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
	Mass Communication (Media) - PG	18-28	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
	B.Com. with three years experience in accounts, purchase, store	18-28	3 L Per Annum	- do -
	B.Sc. BCA, BBA, BA, B.Com (Persuing / Passed)	18-25	1.4 - 1.8 L Per Annum	- do -
	Diploma		1.8 L Per Annum	- do -
Law	LLM	22-28	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
	LLB	22-28	2.4 - 3 L Per Annum	- do -

- उपरोक्त Categories में अधिक प्रतिभाशाली छात्रों को इससे भी अधिक वेतन दे सकते हैं।
- *** Ph.D. candidates भी आवेदन कर सकते हैं। Salary interview के दौरान तय होगी।**
- **योग शिक्षक, प्राकृतिक चिकित्सक / उपचारक, Karate Teacher, Music Teacher, Stenographer (Hindi & English), Script Writer (Hindi & English), Data Operator & Clerk, Editor & Co-Editor, नाट्य, संगीत एवं नृत्यकला के विसारद भी आवेदन कर सकते हैं। वेतन योग्यता अनुसार दिया जाएगा।**

- **Graduate Management Trainee (GMT)**

योग्यता–2024 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा पास करने वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम अंक 60% तथा गणित में 75% अंक प्राप्त किए हों। आयु : 18 वर्ष से कम। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद On Job Training (OJT) में भेजा जायेगा। OJT के साथ-साथ ग्रेजुएशन और MBA या MCA करने की सुविधा दी जायेगी। प्रारंभिक 6 महीनों की ट्रेनिंग के दौरान भोजन और आवास की सुविधा मुफ्त रहेगी, साथ ही 5,000/- प्रतिमाह स्कॉलरशिप मिलेगा। On Job Training के दौरान आवास तथा पढ़ाई के साथ-साथ 11वीं में 8000/-, 12वीं में 10,000/- Graduation Ist year में 12,000/-, IInd Year में 15,000/-, IIIrd Year में 18,000/-, MBA/MCA Ist Year में 22,000/-, MBA/MCA IInd Year में 27,000/- Stipend प्रतिमाह मिलेगा। MBA/MCA पूरा होने के बाद 40000/- और Work Performance के आधार पर प्रतिमाह वेतन / मानधन इससे अधिक भी हो सकता है।

आवेदन हिंदी या अंग्रेजी में ही भरकर भेजें। विस्तृत बॉयोडाटा के साथ-साथ यदि आपने NCC / NSS / संघ शिक्षा वर्ग / प्राथमिक शिक्षा वर्ग / शीत शिविर / PDC आदि कोई शिविर किया है तो उल्लेख करें। सेवा भारती / विद्या भारती / वनवासी कल्याण आश्रम के किसी विद्यालय / छात्रावास या संघ या परिषद अथवा विविध क्षेत्रों से संबंध रहा है तो कब और कैसे। सूर्या परिवार में कोई परिचित हों तो उनका नाम, विभाग भी जरूर लिखें। पढ़ाई का विवरण लिखते हुए, Mark sheet की फोटोकॉपी साथ जोड़ें।

कृपया विस्तारपूर्वक बायोडाटा के साथ निम्नलिखित पते पर अपना CV / आवेदन भेजें। CV / आवेदन Email से भी भेज सकते हैं।

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063 | Email : interview@suryafoundation.org

आवेदन की अंतिम तिथि : 30 अप्रैल 2024

स्वराज्य संस्थापक

छत्रपति शिवाजी

07

आलेख एवं चित्र

ब्रजराज राजावत

स्वराज स्थापना का प्रयास विफल तो हुआ ही, अब बीजापुर व अहमद नगर शाहजी के दुश्मन हो गये... कोई उपाय न देख मुगलों का सहयोग मांगा। शाहजी की वीरता से परिचित बादशाह ने उन्हें पंच हजारी सेना नायक बना लिया।... पुत्र जन्म के समय मुगल अभियान पर थे...

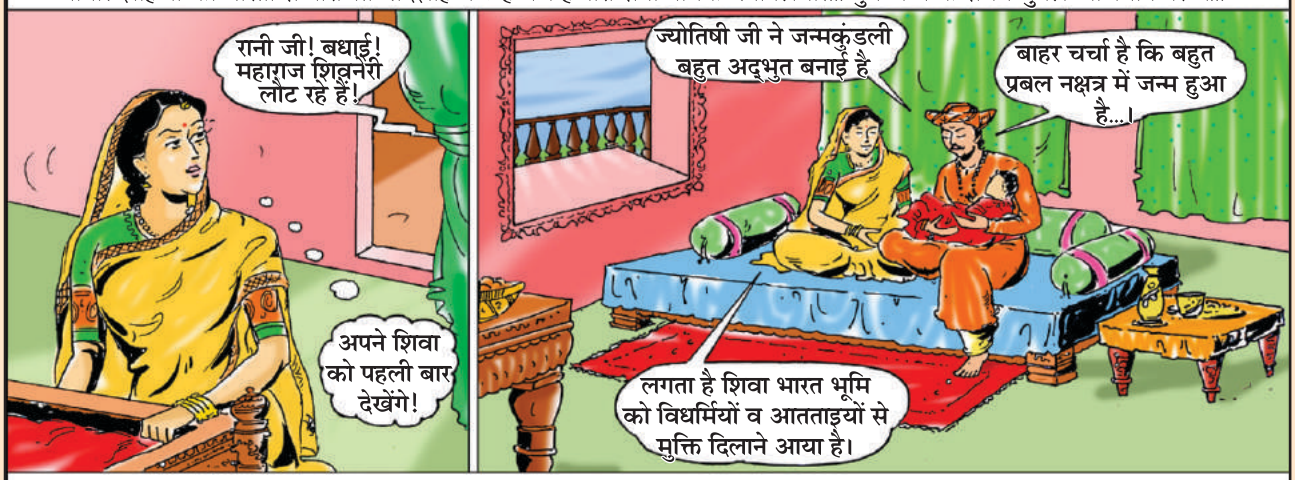

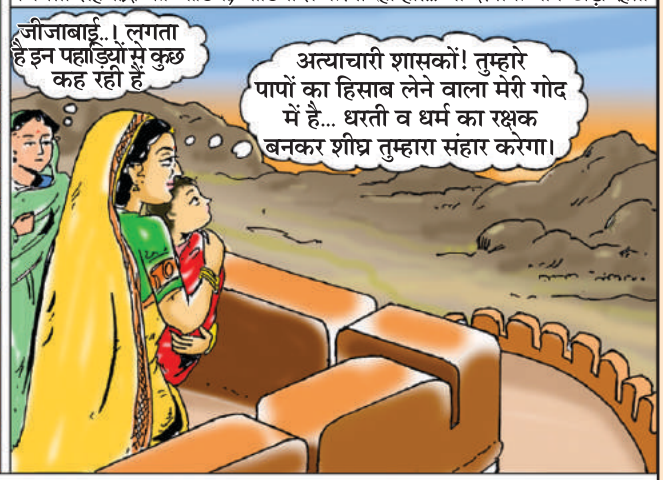

'शिवा' की दुर्ग में गतिविधियां बढ़ने लगीं.. साथियों के साथ मिट्टी के किले बनाकर खेलता।... उसकी स्फूर्ति व लगन देखकर मां हर्षित होती...

पाक्षिक
पाथेय कण
(1-15 मार्च,2024)
(26 फरवरी को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY 202/2024-26

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/WPP 01/2024-26

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी, ए-10, 22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन, 4 मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक- रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 1,2,3,4 व 5 मार्च, 2024 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,